बिलासपुर के झुग्गी बाहुल्य क्षेत्र (मगरपारा) में रहने वाले परिवारों के आर्थिक स्थिति का अध्ययन

कु. आरती तिर्की
शोधार्थी (समाजशास्त्र)

डॉ. ऋचा यादव
विभागाध्यक्ष
सहायक प्राध्यापक
समाजशास्त्र विभाग

डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :–

प्रस्तुत शोध पत्र बिलासपुर शहर के झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले परिवारों की आर्थिक स्थिति पर आधारित है। इस शोध में बिलासपुर शहर के उन परिवारों के रोजमर्रा की जीवन को व्यक्त किया गया है। जिसमें आय के प्रमुख साधानों को केन्द्रित किया गया है। आर्थिक स्थिति को बढ़ाने हेतु वह रोजी मजदूरी एवं छोटी रोजगार (फल ठेला, सब्जी, पान ठेला आदि) पर निर्भर रहता है। चयनित क्षेत्र में रहने वाले स्त्रियाँ, पुरूषों एवं बच्चों के आय की स्थिति को दर्शाया गया है। इस अध्ययन में परिवार का मुखिया आय के अनेक साधनों की खोज करते है। जिससे उनकी आय की स्थिति में सुधार हो सके है।

प्रस्तावना :–

वर्तमान युग में गंदी बस्तियों की समस्या बनती जा रही है। जहाँ तकं भारत जैसे विकासशील देश का प्रश्न है, झुग्गी बस्ती की समस्या यहाँ अत्यधिक गंभीर है। लोगों को बुरी आर्थिक दशा के कारण यह बढ़ती हुए जनसंख्या उन्नत तकनीकी और धीमी प्रगति से होने वाले औद्योगिकीकरण का ही परिणाम है। भारत में झुग्गी बस्तियों का उदय कब हुआ, इसका निश्चित समय नहीं बतलाया जा सकता है, लेकिन जैसे–जैसे समय बितता जा रहा है नई–नई झुग्गी बस्तियों का विस्तार हो रहा है। इस प्रकार गन्दी बस्तियाँ प्रायः सभी बड़े नगरों में विकसित हुई है। बिलासपुर शहर में मगरपारा क्षेत्र झुग्गी बाहुल्य क्षेत्र के अंतर्गत आता है। यह क्षेत्र बिलासपुर के मध्य में स्थित है। इस क्षेत्र के अंतर्गत रहने वाले अधिकतर लोग ग्रामीण है जो अपनी रोजगार हेतु गांव से शहर में आकर रहते हैं। वर्तमान युग मशीनरीकरण का युग है। औद्योगिकीकरण के जितने भी आयाम है, सब मशीन पर निर्भर हैं। लेकिन इन मशीनों की कार्यक्षमता को बनाये रखने अथवा अनुकूल दशाओं के विकास के लिए मजदूरों का संतुलित एवं पौष्टिक आहार शरीर ढकने को पर्याप्त वस्त्र और प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षित रखने के लिए स्वास्थ्यकर आवास की उपलब्धि नितान्त आवश्यक है। लेकिन औद्योगिक प्रगति के बाद आज मजदूरों के आवास की व्यवस्था अच्छी नहीं है। उन्हें गंदी झुग्गी बस्तियों में ही रहना पड़ता है। अतः वर्तमान युग में गंदी बस्तियों की समस्या बढ़ती जा रही है। बिलासपुर शहर में मलिन बस्तीयों की समस्या अत्यधिक गंभीर है। लोगों को निम्न आर्थिक दशा का कारण यह है कि जनसंख्या वृद्धि, रोजगार की कमी, अशिक्षा, कमजोर स्वास्थ्य, नशापान आदि है। परिवारों के आर्थिक स्थिति को मजबूत करने हेतु इन्हे जागरूक करना अति आवश्यक है।

बिलासपुर क्षेत्र के झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को छोटा–बड़ा काम मिल जाता है पर रहने को घर नहीं मिलता। इसलिए इन नगरों को झुग्गी बस्तियों में शरण मिलती है। झुग्गी बस्तियां औद्योगिकता का फलन है जो कई सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं को जन्म देती हैं। यहां पर मूलभूत आवश्यकताएं जैसे – पानी, विद्युत, जल निकासी, स्वच्छ वातावरण, सड़के आदि सुविधाओं का अभाव होता हैं। इस क्षेत्र में रहने वाले लोग प्रवासित जनसंख्या मुख्यतः प्रतिकूल तत्व जैसे– गरीबी, बेकारी, कम मजदूरी, छोटी तथा अनार्थिक जोत, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की कमी आदि।

आर.के. डिकिन्सन के अनुसार–

''स्लम'' नगर के उस भाग को कहते है जहां पर मकान रहने योग्य न हो और जहां का वातावरण नागरिकों के स्वास्थ्य एवं उनकी नैतिकता के लिए हानिकारक सिद्ध हों। यह वह घना बसा हुआ क्षेत्र है, जहां भूमि मूल्य गिरा हो, जहां निवासियों के आर्थिक स्तर निम्न हों,जहां अपराध का आधिक्य, मृत्यु एवं बीमारियों काउच्च दर हों, वहां पर निवास करने वाले व्यक्ति अशिक्षित, निर्धन, अस्वस्थ्य और अधिकांश प्रवासी होते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत अध्ययन का चयन जिन उद्देश्यों को लेकर किया गया है वह इस प्रकार है –

- मगरपारा के झुग्गी बस्तियों के परिवारों के मुख्य आय के साधनों का अध्ययन करना।
- मगरपारा के झुग्गी बस्तियों के परिवारों की व्यय (खर्च) का अध्ययन करना।

प्रयुक्त विधि :–

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। इस शोध में सर्वेक्षण के दौरान बिलासपुर शहर के मगरपारा क्षेत्र के परिवारों को लिया है। इस क्षेत्र के 50 परिवारों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जिसपर शोधकर्ता अपने साक्षात्कार, अनुसूची के आधार पर इस क्षेत्र के परिवारों की आर्थिक स्थिति का आंकलन किया है। इस शोध के अंतर्गत उन परिवारों को लिया गया है जो झुग्गी बस्तियों में निवासरत् है। इस शोध का मूल आधार मगरापारा में निवासरत् परिवारों की आय की स्थिति को जानने हेतु किया जा रहा है।

बिलासपुर क्षेत्र के मगरपारा के परिवारों की आर्थिक स्थिति :–

शोधकर्ता द्वारा अध्ययन से पाया कि इस क्षेत्र में रहने वाले अधिकतर लोग ग्रामीण अंचल से रोजगार हेतु आते हैं, जो अपनी रोजमर्रा की जीवन यापन करने हेतु मजदूरी करते हैं। इस क्षेत्र के परिवारों के सदस्यों की संख्या 5–10 है। जिसमें 2 या 5 सदस्य के माध्यम से आय का स्रोत है। इससे आय से जुड़ी आंकड़ों का मान निम्न है जो आर्थिक स्थिति को दर्शाता है :–

तालिका क्रमांक 1

मगरपारा क्षेत्र के परिवारों की आय का स्रोत के आंकड़े

क्रमांक	आय का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
1	दैनिक मजदूरी	13	26
2	स्वयं का रोजगार	22	44
3	अन्य कार्य	15	30

व्याख्या :– प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हमने पाया है कि दैनिक मजदूरी करने वाले परिवारों की संख्या 26 प्रतिशत है। स्वयं का रोजगार जैसे पान ठेला, गुपचुप ठेला, सब्जी ठेला, फल ठेला आदि इस प्रकार के स्वरोजगार करने वाले परिवारों की संख्या 44 प्रतिशत है, तथा अन्य कार्य हेतु जैसे किसी के दुकान में स्थाई रूप से कार्य करना, घर में स्थाई रूप से कार्य करना, आदि ऐसे परिवारों की संख्या 30 प्रतिशत है। इस स्रोत से प्रत्येक परिवार की आय प्रतिमाह 5000 से 10000 हजार के बीच है। इससे हम कह सकते है कि झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले लोगों की आर्थिक स्थिति आज के महंगाई के अनुसार कम है।

तालिका क्रमांक 2

मगरपारा क्षेत्र के परिवारों की घरेलू समान एवं अन्य व्यय (खर्च) के आंकड़े

क्रमांक	व्यय (खर्च) प्रतिमाह	संख्या	प्रतिषत
1	3000.00 – 5000.00	7	14
2	5000.00 – 7000.00	17	34
3	7000.00 – 10000.00	26	52

व्याख्या :– प्राप्त आंकड़ों के आधार पर हमने पाया है कि घरेलू उत्पाद एवं अन्य व्यय हेतु 3000.00 – 5000.00 के बीच खर्च करने वाले परिवारों की संख्या 14 प्रतिशत है। इसी प्रकार 5000.00 – 7000.00 के बीच खर्च करने वाले परिवारों की संख्या 34 प्रतिशत है, तथा सबसे ज्यादा घरेलू उत्पाद एवं अन्य व्यय हेतु 7000.00 – 10000.00 के बीच खर्च करने वाले परिवारों की संख्या 52 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है कि मगरपारा में निवासरत् परिवारों की आर्थिक स्थिति आय से ज्यादा व्यय है। जिसका कारण अन्य व्यय जैसे शराब, नशीली दवा, गुटका आदि में अधिक मात्रा में व्यय होता है। इस क्षेत्र के अधिकतर लोग इसके आदि रहते है जिससे उन परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो जाती है।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षताः यह कहां जा सकता है कि अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता का अभाव एवं आर्थिक रुप से कमजोर होने के कारण झुग्गी बस्तियों में रहने वाली अधिकांश परिवार किसी न किसी प्रकार के रोग से ग्रसित है। इन बस्तियों में रहने वाले लोगों के नशा मुक्त करने हेतु शासन द्वारा योजनाओं को क्रमबद्ध पालन करना चाहिए। जिससे यहॉ के लोगों को स्वास्थ्य, शिक्षा एवं जागरूक होकर अपने कार्यो को सुचारू रूप से कराया जा सकता है। इस क्षेत्र को साफ–सुथरे एवं गंदे पानी के निकासी हेतु स्वच्छ नालियों का निर्माण करना चाहिए। स्वास्थ्य हेतु स्वास्थ्य उपकेन्द्रों की स्थापना एवं समय–समय पर स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाना चाहिए। सामान्य बीमारियों के कारणों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए, जिससे वे रोगग्रस्त होने से बच सकें।

संदर्भ सूची :–

- चौधरी, पदमसिंह . ''गांवों से षहरों की ओर पलायन'', कुरुक्षेत्र, पृष्ठ–8–9, 2012
- भौमिक, डॉ. अभिजीत (2010), ''भारतीय सामाजिक संरचना एवं समस्या'' हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली
- गुप्ता, एम.एल. (2010), ''समाजशास्त्र'' साहित्य भवन, आगरा
- जोशी, ओमप्रकाश (2008), ''भारत में सामाजिक परिवर्तन'' रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर

- इंटरनेट से प्राप्त जानकारियां
- पाण्डेय, एस.एस. (2008), ''समाजशास्त्र'' टी.एम.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली
- समाचार पत्रिका नई दुनिया, दैनिक भास्कर की रिपोर्टस
- उपाध्याय रमेश, (1996), ''हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार'' राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली